प्रकाशनार्थ

पटना, 17 अगस्त। राजनीति विज्ञानी डा. राहुल मुखर्जी ने कहा है कि यदि नौकरशाही को राजनीतिक समर्थन मिले तो राज्य के भीतर एक विचार मात्र से अच्छे नीतिगत कदम उठाए जा सकते हैं। डा. मुखर्जी ने कहा, 'राज्य के भीतर विचार अधिक मायने रखते हैं क्योंकि वे नीतियों को जन्म देते हैं, जो अंततः राज्य की क्षमता को बढ़ाते हैं।'

हीडलबर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी के राजनीतिक विज्ञानी डा. मुखर्जी बुधवार को आद्री में 'पॉलिसी पैराडिम्स एंड डेवलपमेंट : रिफलेक्शन ऑन इंडिया' विषय पर व्याख्यान दे रहे थे।

आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल के उदाहरणों का हवाला देते हुए डा. मुखर्जी ने कहा कि नौकरशाही के पास चीजों के बारे में अंदरूनी दृष्टिकोण होना चाहिए। इस तरह की तकनीकी रूप से मजबूत कार्यकारी ढांचा से परिणाम देने की संभावना अधिक होगी यदि उन्हें मजबूत संस्थानों और राजनीतिक इच्छाशक्ति का समर्थन प्राप्त हो। डा. मुखर्जी ने आंध्र प्रदेश से सफल नीतिगत हस्तक्षेपों के कई उदाहरणों का प्रस्तुत किए, जो राजनीतिक इच्छाशक्ति के प्रत्यक्ष परिणाम थे। उदाहरण के लिए, डा. मुखर्जी ने कहा, आंध्र प्रदेश में वाईएस राजशेखर रेड्डी के शासन काल के दौरान, कानून निर्माताओं के अच्छे फैसलों के कारण कई सुधार बहुत आसानी से किए जा सके। वहीं, इसके विपरीत पश्चिम बंगाल में डा. मुखर्जी ने कहा कि मनरेगा को बिल्कुल ठीक ढंग से लागू नहीं किया जा सका क्योंकि राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव था।

इस अवसर पर आद्री के सदस्य–सचिव प्रो. प्रभात पी घोष ने अतिथियों का स्वागत किया।

(अंजनी कुमार वर्मा)